अध्याय : ५

उपसंहार

==========

अध्याय – 5

उपसंहार

==========

एक उपन्यासकार के रूप में भीष्म साहनी का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा हैं। भीष्म साहनी हिन्दी उपन्यास साहित्य के एक शक्तिशाली, प्रतिभासंपन्न व्यक्ति हैं। आपके व्यक्तित्व का प्रभाव आपके साहित्य पर पडा हैं। एक लेखक के रूप में भीष्म साहनी का व्यक्तित्व अनेक लेखन प्रकारों में उभरकर सामने आता हैं। भीष्मजी एक सफल अभिनेता, नाटककार, जीवनी लेखक, कथालेखक के रूप में प्रसिध्द रहे हैं, परंतु एक सफल उपन्यासकार के रूप में ही आपकी अधिक ख्याति रही हैं।

भीष्मजी मनुष्य के सारे संघर्ष की जड "अर्थ" मानते हैं। इसी "अर्थ" को लेकर मनुष्य का संपूर्ण जीवन विकसित होता हैं। भीष्मजी ने मनुष्य जीवन का यथार्थवादी चित्रण अपने उपन्यास साहित्य में किया हैं। भीष्म साहनीजी की समस्त कृतियों में हमें प्रगतिवादी के मूलतत्व साम्यवाद का समर्थन तथा पूँजीवाद और उसके सम्बध्द राजनीतिक, सामाजिक, नैतिक और धार्मिक रूढियों के विरूध्द क्रांति, द्वंद्वात्मक, भौतिकवाद–ईश्वर और आत्मा की सत्ता की अस्वीकृति, भौतिक विधान की मान्यता और राष्ट्रीय भावना जो साधारण दक्षिण पंथीय राष्ट्रीयता से भिन्न है, का समावेश भी भीष्मजी की रचनाओं में पूर्ण अन्तर्विरोध तथा पुनरूत्थानवाद और आधुनिकवाद के अन्तर्विरोध क्रमशः खुलते जाते हैं। अपने उपन्यास साहित्य द्वारा भीष्म साहनी स्पष्ट करते हैं कि धर्म और दर्शन का कुप्रभाव मनुष्य को आत्महीन बनाकर गुलामी की दासता में ढकेल देता हैं।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास क्षेत्र में छठवें दशक के उत्तरार्ध में भीष्म साहनी ने अपने प्रथम उपन्यास 'झरोखे' के साथ उपन्यास जगत में प्रवेश किया। 'झरोखे' (1967) एक बालक के जीवन पर आधारित एक बालमनोवैज्ञानिक उपन्यास है। 'झरोखे' उपन्यास के पश्चात

भीष्मजी के उपन्यास लेखन का क्रम बढता ही गया और अपने बहुचर्चित उपन्यास 'तमस' के रूप में उपन्यास जगत् को एक अनुपम कृति भेंट की। इस उपन्यास के लिए आपको साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला। देश जब आजादी के कगार पर खडा था और अंग्रेजी हुकूमत सत्ता भारतीयों के हाथ में सौपने के पहले एक ऐसी फूट डालने में सफल हो जाती है, जो मनुष्य हत्याएँ तो कराती ही है, साथ ही उसका परिणाम यह होता है कि हिन्दू–मुस्लिमों के बीच आपसी रिश्ते टूट जाते हैं। दोनों एक दूसरे के दुश्मन बन जाते हैं।

'झरोखें' और 'तमस' उपन्यासद्वारा आपने जीवन के अनेक अंगों पर प्रकाश डाला हैं। आपकी कथा के केंद्र में आधुनिक भारत के नगरों और महानगरों में रहनेवाला निम्नवर्ग, मध्यवर्ग, साम्राज्यवादी वर्ग और सामन्तवर्ग रहा है। मनुष्य की गलत रूढियाँ, परम्पराएँ, पूँजीवाद, आधुनिकतावाद, साम्प्रदायिकता मनुष्य को अत्यंत नुकसानदेह होती है। समाज का मध्यवर्ग साम्प्रदायिकता की आग में जलता है। सामन्तवाद, पूँजीवाद और आधुनिकतवाद का शिकार बनकर मध्यवर्ग अन्तर्विरोधपूर्ण जीवन बिताता हैं। अपनी गरीबी, बीमारी, प्राकृतिक संकटों के साथ लडते हुए समाज की सामन्तवादी, पूँजीवादी प्रवृत्तियों के साथ भी लड रहा हैं। अपनी आर्थिक मजबूरी के कारण मध्यवर्ग सामन्तवादी, पूँजीवादी व्यवस्था के साथ ही धार्मिक रूढियों, अन्धविश्वासों और साम्प्रदायिकता का शिकार बनता है। हमारा देश स्वतंत्र जरूर हुआ लेकिन निम्नवर्ग को स्वतंत्रता का कोई फायदा नहीं हुआ। समाज के पूँजीपति, व्यापारी, बडे सरकारी अफसर और राजनेताओं को ही स्वतंत्रता का अधिक फायदा हुआ है। राजनेता, धर्मगुरू, पूँजीपति सब आपस में मिलकर समाज का आर्थिक शोषण करते हैं। भीष्म साहनीजी ने 'झरोखें' में मध्यमवर्गीय समाज का वर्णन किया हैं। अपने ही परिवार का चित्रण कर एक मध्यवर्गीय परिवार का यथार्थवादी दृष्टि से मूल्यांकन किया है। 'तमस' द्वारा स्पष्ट किया है कि राजनीतिज्ञ और धर्मगुरू युवावर्ग का उपयोग अपने स्वार्थ के लिए और साम्प्रदायिकता फैलाने के लिए करते हैं।

'झरोखे' में भीष्मजी ने एक छोटे से बालक की आँखों से एक परिवार में घटित छोटी–छोटी घटनाओं को दिखाने और उनका उल्लेख करने का अविस्मरणीय प्रयोग किया है। बालक के सामने घटनेवाली प्रत्येक घटना उसके भीतर एक प्रबल संस्कार बनकर आती है और परिवार के बच्चों के भावी चरित्र की रूपरेखा गढती चली जाती है। अंतत: 'झरोखे' में जहाँ एक ओर जीवन के उल्लासित क्षणों का चित्रण है, वही हमारे आज के मध्यमवर्गीय जीवन के दु:ख, दर्द और उसकी बहुविध त्रासदियों का भी अविस्मरणीय अंकन हुआ है।

इसीप्रकार 'तमस' भी बहुचर्चित उपन्यासों की श्रृंखला में अग्रगण्य है। इस में आजादी के पहले का पंजाब और साम्प्रदायिकता भय के अंधेरे में डूबे वे चंद दिन . धार्मिक जडता को इस्तेमाल करती पूँजीपरस्त राजनीति और उससे रक्त–रंजित हजारों बेकसूर लोग ..... सुअर और गाय को बचा लेने का पुण्य और उसी के लिए होती हुई मनुष्य की हत्याएँ इस दंगे–फसाद के पीछे अंग्रेजों का खतरनाक मस्तिष्क। यह एक वातावरण है, जिसे भीष्म साहनी ने 'तमस' में इतिहास बोध के साथ प्रस्तुत किया है।

'झरोखे' उपन्यास में परिवार के दोनों बच्चों को ब्रह्मचर्य की शिक्षा दी जाती हैं। प्रवृत्ति दमन की शिक्षा दी जाती हैं। स्त्रियों के प्रति गैरमनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण दिखाया जाता है। बदलते हुए सामाजिक संबंधों से बच्चों को अलग रखा जाता है। इन सभी बातों का परिणाम यह होता है कि बच्चों में ग्लानि और हीनता निर्माण हो जाती है। वे पूरी तरह दिशाहीन हो जाते हैं। स्त्रियों के प्रति गैर मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण होने के कारण वे पुस्तकों से औरतों के चित्र फाडकर फेंक देते हैं। वीर्यपात और स्वप्नदोष से आतंकित होकर बच्चे यथार्थ से विमुख हो जाते हैं। परिणामस्वरूप वे अपना आत्मविश्वास खो बैठते है। एक सार्थक भूमिका से वंचित रहकर विरासत भरी उधार की जिंदगी जीने के लिए मजबूर हो जाते हैं। व्यवस्था के प्रति वे सोच भी नहीं सकते और निर्णयहीनता की अनिवार्य नियति को भोगते हैं।

भीष्मजी ने प्रवृत्ति दमन और व्यक्तित्व दमन का यथार्थवादी सूक्ष्म चित्रण झरोखे उपन्यास में किया हैं। अनेक छोटे–मोटे प्रसंगों को संवेदनशीलता के साथ स्पष्ट किया है।

उपन्यास में स्पष्ट किया है कि ऐतिहासिक परंपरा, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और परंपरावादी मूल्यों के भ्रमों से तभी मुक्त हुआ जा सकता हैं, जब मनुष्य को सामाजिक विकास के यथार्थवादी दृष्टिकोण से परिचित कराया जा सके।

देश की साम्प्रदायिकता की समस्या को अपने अनुभव के आधारपर चित्रित करने में भीष्म साहनी सफल हुए है। इस दृष्टि से उनका 'तमस' महत्वपूर्ण है। साम्प्रदायिकता को राष्ट्रीय और सामाजिक परिप्रेक्ष्य में दिखाते हुए भीष्मजी साम्प्रदायिकता की जड़ तक गए हैं। साम्प्रदायिकता की समस्या के ऐतिहासिक, राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक, सामाजिक कारण बताते हुए साम्प्रदायिकता के भयंकर परिणामों को 'तमस' उपन्यास में स्पष्ट किया है। आगजनी, धार्मिक कट्टरता, देशविभाजन, हत्याएँ, अलगाव आदि परिणामों को दर्शाया है। साम्प्रदायिकता फैलाने के लिए भीष्मजी ने सत्तापक्ष अथवा साम्राज्यवाद को कारणीभूत बताया है। 'तमस' मानवतावादी अद्यतन दर्शन की सीमाओं का अतिक्रमण कर साम्प्रदायिकता की समस्या और उससे संपृक्त विचारधारात्मक संदर्भों को नए और यथार्थवादी दृष्टिकोण के साथ व्याख्यायित करता है। इस उपन्यास में भीष्मजी स्पष्ट करते है कि समाज में साम्प्रदायिकता फैल जाने के पश्चात उसके जो परिणाम होते है उन परिणामों को हमेशा सामान्य जनता को ही भुगतना पडता हैं, जो लोग साम्प्रदायिकता फैलाते हैं उन्हें कोई नुकसान नहीं होता। साम्प्रदायिकता का निर्माण होता है तो उस साम्प्रदायिकता के सामने गांधीवाद और साम्यवाद की भी पराजय होती है। सामान्य जनता के नैतिक संघर्ष के प्रति समझदारी पैदा करना भीष्मजी के उपन्यासों की एक यथार्थवादी विशेषता रही हैं।

भीष्म साहनी राजनीति के अनेक अंगों का यथार्थवादी चित्रण स्पष्ट रूप से करते हैं। राजनीतिज्ञों की स्वार्थी वृत्ति, अनैतिक साम्प्रदायिकता और पुँजीवाद का राजनीतिपर पडा प्रभाव, भ्रष्ट तत्वों का प्रभाव, साम्प्रदायिकता फैलाने में सत्तापक्ष की भूमिका, धर्म का राजनीति के लिए गैर उपयोग, साम्प्रदायिकता फैलाने के लिए युवावर्ग का उपयोग, सरकारी अफसरों तथा पूँजीपतियों के अत्याचार और स्वार्थवृत्ति, साम्राज्यवाद के साथ सामन्तों का गठबंधन,

साम्प्रदायिकता रोकने में सभी राजकीय पार्टियों की असफलता, आजादी का फायदा सिर्फ पूँजीपतियों ओर राजनीतिज्ञों को ही होता है। सामान्य जनता को कोई फायदा नहीं होता। उपर्युक्त सभी भीष्मजी के यथार्थवाद की विशेषताएँ रही हैं। इतिहास की साहित्य में पुनर्रचना की आवश्यकता है, जिसे भीष्मजी ने 'तमस' में बहुत हद तक पूरा किया है। एक ओर अंग्रेज अधिकारी रिचर्ड का निर्दय और अमानवीय रवैया है, जो भारतीय जनता को भी कुछ–कुछ और कुछ नहीं के बीच कोई चीज मानता है। रिचर्ड और लीजा अपने कुछ व्यक्तिगत क्षणों में भारतीय खानसामें की उपस्थिति को महत्व नहीं देते। खानसामें की उपस्थिति उनके एकांत को भंग नहीं करती, उन क्षणों में ऐसा लगता है कि खानसामा मनुष्य न होकर कोई पालतू जानवर हो जो कमरे में उपस्थित हो गया हो। अंग्रेज हाकिम का यही दृष्टिकोण कुएँ में औरतों और बच्चों के डूब जाने की घटना को महज अपने कौतुहल का एक नया विषय मानने में प्रकट होता है।

वर्तमान हिंदी साहित्य की अनेक प्रवृत्तियाँ रही हैं, परंतु इन सभी प्रवृत्तियों में तीन ही प्रवृत्तियाँ प्रमुख मानी गई हैं – आदर्शवाद, यथार्थवाद और प्रयोगवाद। वर्तमान काल में यथार्थवाद ही साहित्य की अधिक व्यापक प्रवृत्ति रही है। विशुध्द रूप से जीवन के सत्य को देखना ही यथार्थवाद हैं। यथार्थवाद में जीवन को 'था, है और होगा' इन तीन अवस्थाओं में देखा जाता हैं। जीवन इन्हीं तीनों अवस्थाओं से संघर्ष करता हुआ, विषम परिस्थितियों में अपना विकास करता है। यथार्थवाद जीवन और जगत की द्वंद्वात्मक प्रगति में जीवन की प्रगति चेतना को लेकर स्वाधीनता से पूर्व ही जन्मा था और स्वाधीनता प्राप्ति के समय तक यह जीवन–दर्शन हिंदी साहित्य के एक व्यापक फलक के रूप से स्वीकृत दर्शन हो गया। हिंदी उपन्यास साहित्य में यथार्थवाद के सबसे बडे पोषक रहे है प्रेमचंदजी। स्वातंत्र्योत्तर साहित्य में प्रमुख रूप से राहुल सांकृत्यायन, यशपाल, फणीश्वरनाथ रेणु, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, डॉ.रांगेय राघव, नागार्जुन, भीष्म साहनी, श्रीलाल शुक्ल, अमृतराय, विष्णु प्रभाकर, और कमलेश्वर आदि साहित्यकारों का साहित्य पूरी तरह से मार्क्सवादी जीवन–दर्शन से प्रभावित हैं और भीष्म साहनी भी उसी परंपरा का निर्वाह करते हैं।

भीष्म साहनीजी ने हिंदी उपन्यास साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश कर न केवल स्वयं की बहुमुखी प्रतिभा का परिचय, साथ ही हिंदी साहित्य के लिए नवीन दिशा ज्ञान भी दिया है। देश की आजादी के लिए अप्रत्यक्ष रूप से संघर्षरत भीष्मजी बँटवारे के बाद जब दिल्ली में रहने लगे तो साहित्य संदिर के आलोकित द्वार पर बैठकर साधना आरंभ कर दी। किसी भी भाषा के साहित्य का अध्ययन करके उस देश की परिस्थितियाँ, मान्यताएँ, तथा उस देश की प्रवृत्तियाँ जानी जा सकती हैं। भीष्म साहनी का साहित्य एक ऐसा दर्पण है, जिसमें साहित्य की सभी मान्यताएँ, आशाएँ, आकांक्षाएँ और सिध्दांत सहज ही प्रतिबिंबित होते हैं।

भीष्मजी जिस दृष्टिकोण से जीवन, समाज और उनके विभिन्न अंगो–प्रत्यंगों को देखते हैं उसी रूप में पाठक के सामने प्रस्तुत करते हैं। समाज में क्रांति लाकर भीष्मजी अपने सिध्दांत और मान्यताओं को एक नया रूप देना चाहते हैं। भीष्म साहनी के विचार मार्क्सवादी हैं परंतु रचना और विचारधारा के अंत:संबंधों को लेकर उनके यहाँ कोई परेशानी नहीं है। हैं तो केवल यथार्थ का एक संपूर्ण और संश्लिष्ट बोध, जिसे भीष्मजी बिना किसी आवेश या उतावलेपन के एक मानवीय संस्पर्श तथा प्रामाणिकता के साथ रचना प्रक्रिया में ढाल देते हैं।

भीष्म साहनी की विचारधारा से ही स्पष्ट हो जाता है कि वे एक प्रगतिशील लेखक हैं। उनकी सभी रचनाओं में सामाजिक चेतना का यथार्थवादी विकास मिलता है। भीष्म साहनी का जीवन दर्शन प्रेमचंद और यशपाल के बीच का जीवन दर्शन है, और उनके साहित्य की दृष्टि भी तीक्ष्ण ओर व्यंग्यात्मक होते हुए भी संतुलित हैं। अपने विचार तथा मान्यताओं को व्यक्त करने में भीष्मजी जरा भी नहीं हिचकिचातें क्योंकि उन्हें अपनी मान्यताओं में दृढ विश्वास है। प्रगतिवादी आलोचकों का कहना है कि 'वास्तव' में अपने मूल रूप में जीवन का एक दृष्टिकोण होते हुए भी व्यावहारिक रूप में प्रगतिवादी एक विशेष राजनीतिक विचारधारा का ही रूप है जो बलपूर्वक साहित्यद्वारा अपनी प्रत्याभिव्यक्ति चाहता है। इसलिए प्राय: उसमें वही सामाजिक उत्साह और प्रचार की भावना मिलती है, जो सम्प्रदायों में सर्वत्र मिलती है। परंतु भीष्मजी जिस विचारधारा के प्रमुख है, वह तो शरीर में रक्त की तरह उनकी रचनाओं में रची–बसी है।

भीष्मजी ने प्रेमचंद्र और यशपाल की तरह यथार्थ का चित्रण किया है। परिवेश के अनुसार वस्तु और पात्रों के अंत:संबंधों को किस तरह प्रतिपादित किया जाय, यह भीष्मजी अच्छी तरह जानते हैं। इसीकारण वे प्रेमचंदजी के निकट पहुँचते है। भीष्मजी ने प्रेमचंद की तरह ग्रामीण वस्तु को नहीं पकडा फिर भी उनका मुहावरा प्रेमचंदजी से मिलता जुलता हैं। घटना दृष्टांत और वस्तु–परिप्रेक्ष्य की दृष्टि से भीष्मजी यशपालजी के निकट दिखाई देते हैं।

भीष्मजी ने एक उपन्यासकार के रूप में जिन छः उपन्यासों का निर्माण किया है, उन उपन्यासों में नये–नये पात्रों की सृष्टि अलग–अलग परिवेशों में एक समाजवादी वैज्ञानिक दृष्टि से की है। भीष्मजी ने यथार्थवाद के नामपर न तो समाज के कुत्सित ओर बीभत्स रूप का चित्रण किया है और न ही यथार्थ के चित्रण में ही अपने कर्तव्य को पूरा माना है। आपने यथार्थ को एक व्यापक परिप्रेक्ष्य में और एक स्वस्थ एवं तटस्थ दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है। भीष्मजी के साहित्य में सामाजिक यथार्थ का वह संघर्ष अधिक सामाजिक सत्य के रूप में उभरकर सामने आता है, जो सतह की नीचे की खाई में ऱ्हासोन्मुख और प्रगतिशील शक्तियों के बीच अनवरत रूप से जारी रहता है। भीष्म साहनी अपने उपन्यास की कथावस्तु का चयन बडी सावधानी से करते हैं, परंतु सिर्फ कथावस्तु ही नहीं, बल्कि भीष्मजी कथावस्तु के लिए आवश्यक जीवन और पात्रों के अत्यंत निकट जा पहुँचते हैं। भीष्मजी अपनी पूरी सोच समझ के साथ, अपनी दृष्टि के अनुसार कथावस्तु को आकार प्रदान करते हैं।

भीष्मजी की और विशेषताएँ है, जैसे उनकी अद्‌भुत निरीक्षण शक्ति और अद्‌भुत जागरूकता। उन्हें जिन पात्रों का निर्माण अपने उपन्यास साहित्य में करना हैं, उन पात्रों की संरचना, उसका ढाँचा, मानसिकता, मांस–मज्जा, सोच–समझ और संस्कार उनके मानस पटलपर उभर आते हैं। भीष्मजी ने "झरोखे" और "तमस" में जिन विशिष्ठ पात्रों की रचना की है वे पात्र निम्नप्रकार से हैं – 'झरोखे' का बालक और तुलसी, 'तमस' का नत्थू, जनरैल, देवव्रत, हरनामसिंह, मीरदाद, रणवीर, देवदत्त, शहनवाज, रिचर्ड, सोहनसिंह, राजो, बंतो, अंकरा, रमजान, तेजासिंह, लीजा और प्रकाशो। इन पात्रों का स्वयं के अस्तित्व के लिए निरंतर संघर्ष

इन्हें अधिक उर्जावान बनाता है। ये सभी पात्र किसी भी परिवेश में अपनी जीवंतता बनाए रहते हैं। ये पात्र कभी मन ही मन टूटते नही बल्कि संघर्ष ज्यों-ज्यों बढ़ता जाता है, इनकी क्षमता, साहस और धैर्य की कसौटी में निरंतर वृध्दि होती जाती हैं।

समाजवादी लेखकों के उपन्यासों में यथार्थ चित्रण में एक गहराई होती है। सामाजिक अन्तर्विरोध और वर्ग विश्लेषण की वैज्ञानिक समझ हमें इन उपन्यासकारों के उपन्यासों में नजर आती है। इसीकारण भीष्मजी ने भी अपने उपन्यासों में आज के जटिल जीवन के विविध अंगों का यथार्थवादी चित्रण किया हैं। वे यथार्थ के असली रूप को सफलता के साथ चित्रित करते हैं। यथार्थवादी चित्रण के साथ भीष्मजी ने जिन समस्याओं को अपने उपन्यास 'झरोखे' और 'तमस' में चित्रित किया है वे निम्नानुसार हैं –

(1) अशिक्षा–परिणाम और निदान।

(2) साम्प्रदायिकता एक विकार।

(3) शोषक, शोषित समाज और व्यवस्था।

(4) अंग्रेजों की कुटिल राजनीति।

उपर्युक्त सभी समस्याओं को भीष्मजी ने अपने उपन्यासों में अत्यंत सफलता के साथ चित्रित किया है। जहाँ उन्होंने इन समस्याओं का चित्रण किया है, वहीं इन सभी समस्याओं के निदान के लिए रास्ता सुझाया है।

हिंदी साहित्य में भीष्म साहनीजी को "तमस" के कारण ही अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। इसका कारण इस उपन्यास की कथावस्तु रही है। इस उपन्यास पर जब गोविंद निहलानी जी ने फिल्म बनाई तो उनको और भी अधिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई। 'तमस' खासतौर पर देश के विभाजन पर लिखा एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। उनकी वह एक सर्वश्रेष्ठ कलाकृति है। राष्ट्रीय स्वाधीनता के नाम पर अनेक लोगों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया ऐसे लोगों का चित्रण भी भीष्मजी ने किया है। "तमस" द्वारा भीष्मजीने स्पष्ट किया है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी

भारत अँधेरे में जी रहा है, क्योंकि भारत के जनसामान्यों के मस्तिष्क में आज भी साम्प्रदायिकता का जहर भरा हुआ है। यह साम्प्रदायिकता भारत में हो या विश्व में कही भी हो, मानव जाति के लिए बहुत घातक होती है। शायद इसीकारण आज भी न केवल पंजाब बल्कि पूरा भारत साम्प्रदायिकता की इस आग में जल रहा हैं। "तमस" उपन्यास के द्वारा भीष्मजी ने भारतीय समाज में व्याप्त धार्मिक रूढी और उसकी जडता को अत्यंत धैर्य और तटस्थता के साथ स्पष्ट किया है। पूँजीवादी, आधुनिकता बोध ओर यथार्थवादी विचारधारा के अन्तर्विरोधों को मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, पारिवारिक प्रसंगों में चित्रित करने में भीष्म साहनी सफल हुए हैं। राष्ट्रीय स्वाधीनता और उससे जुडी अनेक समस्याओं को भीष्मजी ने अपने उपन्यास साहित्य में रेखांकित किया है। भीष्म साहनीजी का जीवन दर्शन मार्क्सवादी दर्शन से ओत-प्रोत भरा हुआ हैं।

साहित्य के प्रगतिशील आंदोलन ने हमें अनेक यथार्थवादी उपन्यासकार दिए हैं। उनमें भैरवप्रसाद गुप्त, अमृत राय, राजेन्द्र यादव, श्रीलाल शुक्ल, जगदम्बा प्रसाद दीक्षित, भीष्म साहनी, काशीनाथ सिंह आदि उपन्यासकार महत्वपूर्ण है। आधुनिक कथासाहित्य के ये वे नाम हैं, जिनकी कृतियों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण हमें सजीव रूप में मिलता है।

भीष्म साहनी अपनी यथार्थवादी मार्क्सवादी दृष्टि से समाज का सच्चा चित्रण करते हैं। इस चित्रण में वे हमें यह संकेत देते हैं कि समाज में आर्थिक समानता की स्थापना से ही राष्ट्र के चरित्र का सच्चे अर्थ में निर्माण किया जा सकता है। भीष्म साहनीजी अपने साहित्य निर्माण में कही भी उपदेशक या सुधारवादी दृष्टि से हमारे सामने नहीं आते। सामाजिक जीवन की वास्तविकता का प्रभावशाली चित्रण भीष्मजी ने अपने उपन्यासों में किया है। इस दृष्टि से भीष्मजी के "झरोखे" और "तमस" दोनों उपन्यास अत्यंत महत्व रखते हैं। आपके उपन्यासो में घटनाओं और पात्रों के आन्तरिक सम्बन्धों का सफलता के साथ निर्वाह हुआ हैं। भीष्मजी ने जितने उपन्यासों का निर्माण किया हैं। उन उपन्यासों में "तमस" उपन्यास का स्थान सर्वोच्च है। अनेक समीक्षक विद्वानों ने आपके "तमस" उपन्यासपर ही अधिक ध्यान दिया हैं। इस दृष्टि से राजेश्वर सक्सेना और प्रताप ठाकुर द्वारा सम्पादित "भीष्म साहनी : व्यक्ति और रचना",

डॉ.प्रेमकुमार की "हिन्दी उपन्यास : अन्तरंग पहचान", डॉ.सुर्यनारायण रणसुंभे की "देशविभाजन और हिन्दी कथासाहित्य", अभयकुमार दुबे की "साम्प्रदायिकता के स्त्रोत" आदि पुस्तकें महत्वपूर्ण है। जिस यथार्थवादी, मार्क्सवादी दृष्टि से जीवन और समाज का चित्रण भीष्म साहनी अपने उपन्यासों में करते हैं, उसमें से "झरोखे" और "तमस" में वर्णित भीष्मजी के यथार्थवाद को मैने स्पष्ट किया है।

इस लघु शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में भीष्म साहनी के व्यक्तित्व और उनकी रचनाओं पर बडे विस्तार से विचार किया है। साहित्य निर्मिति में उनका जीवन, उनका अनुभव सहायक रहा है। इस दृष्टि से विवेचना की है।

दूसरे अध्याय में आलोच्य दोनों उपन्यास "झरोखे" और "तमस" के कथ्य को विस्तार से स्पष्ट किया है, जिसके कारण दोनों उपन्यासों की कथावस्तु का परिचय हमें होता हैं।

इस लघुशोध प्रबंध के तीसरे अध्याय में भीष्मजी के दोनों उपन्यास "झरोखे" और "तमस" का यथार्थवाद की दृष्टि से विचार करके दोनों उपन्यासों में चित्रित यथार्थवाद के कई प्रसंगों को स्पष्ट किया है। जिसके कारण भीष्मजी की यथार्थवादी दृष्टि का परिचय होता हैं। दोनों उपन्यासों का यथार्थवाद की दृष्टि से विचार करते हुए उसके संदर्भ में यथार्थवाद के विविध प्रकारों की संक्षेप में विवेचना की हैं।

चौथे अध्याय में "झरोखे" और "तमस" उपन्यासों को शिल्पविधान की दृष्टि से देखा गया है। शिल्पविधान के अंतर्गत, उपन्यास के तत्वों को स्पष्ट करते हुए उपर्युक्त दोनों उपन्यासों का इन्ही तत्वों के आधारपर विवेचन किया हैं।

इसप्रकार भीष्मजी के दो उपन्यास "झरोखे" और "तमस" को उपर्युक्त दृष्टिकोण से स्पष्ट करना ही इस लघु शोध प्रबंध की मौलिकता है।